ISSN - 2231 - 2749

NUMBER - 30

2017

JOURNAL

OF THE

MADHYA PRADESH ITIHAS PARISHAD

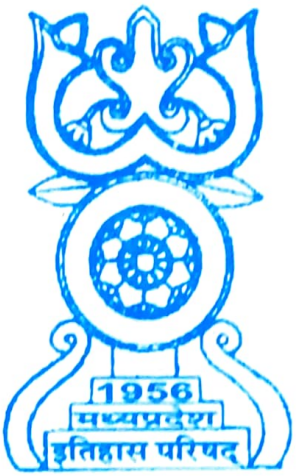

EDITORS

Prof. R. N. Shrivastava Prof. Vandana Gupta

 No. 30/2017/ISSN 2231-2749

राजनीति एवं प्रशासन का मूल : कौटिल्य का अर्थशास्त्र

डॉ. सीमा पान्डेय
अध्यक्ष - इतिहास विभाग
गुरू घासीदास विश्वविद्यालय, बिलासपुर (छग)

भारतीय विचारकों के विषय में पश्चिमी विचारक बहुत दिनों तक यह मत व्यक्त करते रहे हैं कि भारतीयों की रूचि प्रायः आध्यात्म जैसे दार्शनिक विषयों के अध्ययन की ओर ही रही है, राजनीति जैसे व्यावहारिक विषय से संबंधित विचारों में उनका कोई अनुदाय नहीं रहा है। यही कारण है कि पाश्चात्य राजनीतिक विचारक, अरस्तू को राजनीतिशास्त्र का जनक मानते हैं। किन्तु यह बात केवल उन्हीं लोगों के विचार से सत्य हो सकती है, जिन्होंने पूर्वीय राजनीतिशास्त्र के महान विचारक कौटिल्य का अध्ययन न किया हो। वास्तविकता इस संबंध में यह है कि यूनान में जिस समय राजनीतिशास्त्र के जनक कहे जाने वाले अरस्तू अपनी कृति 'पॉलिटिक्स' में अपने राजनीति संबंधी ज्ञान को आगे आने वाली पीढ़ियों के लिए लेखबद्ध कर रहे थे, लगभग उसी समय भारतीय राजनीति दर्शन के अधिष्ठाता कौटिल्य, विशाल मौर्य-साम्राज्य के महामंत्री के रूप में प्राप्त अपने व्यावहारिक राजनीतिक ज्ञान को अपनी अमर कृति 'अर्थशास्त्र' में कदाचित इसलिए सूत्रबद्ध कर रहे थे कि आगे आने वाले युग में भारतीयों पर यह दोष न लगाया जा सके कि वे कोरे आध्यात्मवादी हैं तथा राजनीतिशास्त्र संबंधी विचारों के संसार में उनका कोई मौलिक अनुदाय नहीं है। आचार्य कौटिल्य के 'अर्थशास्त्र' के अस्तित्व से भारतीयों के विषय में पाश्चात्य विचारकों में बहुत दिनों से चला आने वाला यह भ्रम ही दूर नहीं हो जाता कि भारतीयों की रूचि राजनीति जैसे व्यावहारिक विषयों की ओर न होकर आध्यात्म संबंधी केवल दार्शनिक विषयों की ओर ही रही है, वरन् उसमें आए हुए अनेक उद्धरणों से यह भी सिद्ध हो जाता है कि राजनीति विषयक उच्च कोटि के ग्रंथ भारत में उससे पहले भी लिखे जाते रहे थे। जैसा श्री वन्ध्योपाध्याय ने कहा है, 'कौटिल्य का अर्थशास्त्र ...... पूर्ववर्ती युग के आध्यात्मवादी प्रचार के विरूद्ध हुई भौतिकवादी प्रतिक्रिया का प्रतिनिधित्व करने वाले शासन की कला पर सबसे पहले लिखे गए सुव्यवस्थित ग्रंथों में से है।'[1] वह वस्तुतः श्री घोषाल के इस कथन का प्रमाण है कि भारतीय उन लोगों की श्रेणी के हैं, जिन्होंने इतिहास के पृष्ठों पर अपनी छाप राजनीतिक विचार के मौलिक ढाँचें की नींव डालने वाली के रूप में छोड़ी है।[2]

अंग्रेजी में 'इकोनॉमिक्स' (Economics) कहे जाने वाले अर्थशास्त्र का जितना संकुचित अर्थ हम आजकल लेते हैं, उतना संकुचित अर्थ उसका प्राचीन भारत में नहीं लिया जाता था। एक आधुनिक अर्थशास्त्री मार्शल के अनुसार, 'अर्थशास्त्र व्यक्ति गत एवं सामाजिक क्रिया-कलाप के उस पर भाग का परीक्षण करता है, जिसका संबंध सुख-समृद्धि के भौतिक साधनों की प्राप्ति तथा उसके प्रयोग के साथ अत्यंत घनिष्ठ होता है।'[3] इस विचार के अनुसार अर्थशास्त्र व्यक्ति के केवल आर्थिक क्रिया-कलाप का अध्ययन होता है। किन्तु प्राचीन भारतीय संस्कृति के अनुसार मनुष्य के जीवन के जो चार ध्येय- धर्म, अर्थ काम व मोक्ष हैं, अर्थ उनमें से एक है। 'अर्थशास्त्र' के पंद्रहवें अधिकरण के प्रारंभ में स्वयं आचार्य कौटिल्य द्वारा दिए गए स्पष्टीकरण के अनुसार

'अर्थ मनुष्य की जीविका के संचालन में सहायक होता है। मनुष्य जीविका के उपार्जन के लिए कृषि कर्म आदि भूमि पर ही करते हैं। अतः मनुष्य व भूमि को अर्थ कहा जाता है। इसलिए इस मनुष्य युक्त भूमि (राज्य) को प्राप्त करने व उसकी रक्षा करने के ज्ञान से संबंधित शास्त्र को अर्थशास्त्र कहते हैं।' इस स्पष्टीकरण के अनुसार अर्थशास्त्र वह शास्त्र है, जिसमें राज्य की प्राप्ति तथा उसकी रक्षा संबंधी अध्ययन किया जाता है। राज्य में चूँकि धर्म, राजनीति, शासन, कानून, व्यापार, उद्योग तथा कृषि आदि सभी सम्मिलित हैं अतः अर्थशास्त्र आचार्य के अनुसार भूमियुक्त मनुष्यों के जीवन के संचालन से संबंधित ज्ञान का शास्त्र है।

आचार्य कौटिल्य ने अपने 'अर्थशास्त्र' में मुख्यतः राजनीतिक समस्याओं का विवेचन तथा उनका समाधान प्रस्तुत किया है। उन्होंने उन अन्य अनेक विद्वानों के विचारों का अध्ययन करके, जिन्होंने 'पृथ्वी प्राप्त करने' व उसकी रक्षा करने पर ग्रंथ लिखे थे, अपने 'अर्थशास्त्र' की रचना की है। 'अर्थशास्त्र' की रचना, सूत्र व उनके भाष्यों में की गई है तथा वह पंद्रह अधिकरणों में विभक्त है, जो निम्नानुसार है -

पहला अधिकरण - विनयाधिकारिक में राजा के आमात्य की योग्यता, उनकी नियुक्ति संबंधी परीक्षा, गुप्तचर, उनके प्रकार व उनकी नियुक्ति तथा राजा की रक्षा आदि से संबंधित समस्याओं का विवेचन किया गया है।

दूसरा अधिकरण - अध्यक्ष प्रचार में विविध पदाधिकारी, उनके कार्य, दुर्गों के प्रकार, वित्त का नियंत्रण तथा क्रय-विक्रय आदि से संबंधित नियमों का निरूपण किया गया है।

तीसरा अधिकरण - धर्मस्थीय में दीवानी के वादों, विवाह तथा उत्तराधिकार आदि विषयों का विवेचन किया गया है।

चौथा अधिकरण - कारूक रक्षण में समाज के कंटकों अर्थात चोरी आदि के उपचार की व्यवस्था का विवेचन किया गया है।

पाँचवाँ अधिकरण - योगवृत्त में राज्य के कर्मचारियों के कर्त्तव्यों का निरूपण किया गया है।

छठा अधिकरण - मण्डल-योनि में राज्य के सात तत्त्वों (सप्तांग) का वर्णन किया गया है।

सातवाँ अधिकरण - पाड्गुण्य में परराष्ट्र संबंधों का विवेचन किया गया है।

आठवाँ अधिकरण - व्यवसनाधिकारक में सेना संबंधी विषयों का विवेचन किया गया है।

नवाँ अधिकरण - अभियास्यत्कर्म में विजय के लिए अभियान करने से पूर्व के कार्यों पर विचार किया गया है।

दसवाँ अधिकरण - सांग्रामिक में युद्ध आदि का वर्णन किया गया है।

ग्यारहवाँ अधिकरण - संघवृत्त में कूटनीति एवं भेदनीति आदि का विवेचन किया गया है।

बारहवाँ अधिकरण - अवलीयस में दुर्बल राजा की छल नीति पर विचार किया गया है।

तेरहवाँ अधिकरण - दुर्लभ्योपाय में शत्रु के किले पर पहुँचने के उपायों का वर्णन किया गया है।

चौदहवाँ अधिकरण - औपनिषदक में विष-मंत्र आदि के प्रयोग द्वारा शत्रु को जीतने के उपाए बताए गए हैं।

पंद्रहवाँ अधिकरण - तंत्र युक्ति में अर्थ के निर्णय संबंधी युक्तियों का विवेचन किया गया है।

इस प्रकार, 'अर्थशास्त्र' में आचार्य ने राजनीति संबंधी समस्याओं तथा उनके समाधान पर बड़े विशद रूप से लिखा है। ग्रंथ की इस विशदता के कारण कुछ विद्वान इसे एक व्यक्ति का कार्य मानने के लिए तैयार नहीं होते तथा कुछ विचारक इस संबंध में यहाँ तक कहते हैं कि 'अर्थशास्त्र' कौटिल्य की ही रचना है, इसका कोई निश्चय नहीं है तथा कौटिल्य का नाम उसके रचयिता के रूप में वैसे ही जोड़ा जाता है। इस मत के समर्थक

मुख्यतः कुछ विदेशी विद्वान हैं, जिमनें ओटस्टाइन, डॉक्टर जौली तथा कीथ के नाम विशेष उल्लेखनीय हैं। किन्तु अनेक ऐसे प्रमाणों के सामने, जिनसे 'अर्थशास्त्र' की रचना का विष्णुगुप्त, चाणक्य या कौटिल्य द्वारा किया जाना स्पष्ट सिद्ध हो जाता है, उक्त विदेशी विचार कोरे भ्रम ही प्रतीत होते हैं।

'अर्थशास्त्र' के अंत में ग्रंथकार ने स्वयं ही स्पष्ट कहा है कि उसकी रचना विष्णुगुप्त ने की थी। 'अर्थशास्त्र' के विषय में जो कुछ आचार्य कामन्दक के 'नीतिसार' में कहा गया है, उससे भी यह स्पष्ट है कि 'अर्थशास्त्र' की रचना विष्णुगुप्त ने की थी। 'नीतिसार' के प्रारंभ में ही ग्रंथकार ने कहा है कि 'नीतिसार उस विद्वान के ग्रंथ पर आधारित है, जिसने वज्र की तरह अविचल, अडिग नंद वंश को उखाड़ महार्णव से नीतिशास्त्र रूपी नवनीत का दोहन किया। ऐसे उस महामति विष्णुगुप्त नामक विद्वान को नमस्कार।'[4] 'कौटिल्य' व 'चाणक्य' 'अर्थशास्त्र' के रचयिता विष्णुगुप्त के ही पर्याप्त अथवा उपनाम थे, यह बात संस्कृत के अनेक शब्दकोषों से सिद्ध हो जाती है, क्योंकि उसमें 'कौटिल्य' तथा 'चाणक्य' को विष्णुगुप्त का पर्यायवाची दिखाया गया है।

कुछ आधुनिक विद्वानों ने भी इस बात का समर्थन किया है कि 'अर्थशास्त्र' की रचना आचार्य विष्णुगुप्त कौटिल्य ने की है। इन विद्वानों में पण्डित शाम शास्त्री, महामहोपाध्याय पंडित गणपति शास्त्री, श्री काशीप्रसाद जायसवाल, श्री राधाकुमुद मुकर्जी, श्री हिल ब्राण्ट श्री विन्सेन्ट स्मिथ के नाम उल्लेखनीय हैं। पंडित शाम शास्त्री[5] ने अपनी विद्वतापूर्ण विवेचना में यह स्पष्ट किया है कि आचार्य कौटिल्य चन्द्रगुप्त मौर्य के आमात्य थे, 'अर्थशास्त्र' उन्हीं की कृति है तथा उनके 'अर्थशास्त्र' का वही मूल रूप है, जो इस समय उपलब्ध है। 'अर्थशास्त्र' कौटिल्य की कृति है तथा वह अपने मूल में प्राप्य है, इसका समर्थन श्री हिल ब्राण्ट तथा श्री स्मिथ ने भी किया है। डॉक्टर जायसवाल[6] ने भी बड़े प्रामाणिक आधारों पर यह सिद्ध किया है कि 'अर्थशास्त्र' जाली ग्रंथ न होकर संस्कृत साहित्य का महान ग्रंथ है, उसके रचयिता कौटिल्य कोई कल्पित व्यक्ति न होकर सम्राट चन्द्रगुप्त के महामात्य थे तथा उसका मूल रूप वही है, जो इस समय प्राप्त है।

इस प्रकार स्पष्ट है कि 'अर्थशास्त्र' राजनीति संबंधी एक अत्यंत महत्वपूर्ण ग्रंथ है, जिसमें राजनीति के सैद्धांतिक व व्यावहारिक दोनों पक्षों का समुचित विवेचन किया गया है। कुछ विद्वानों के मतानुसार, जिनमें डेविस प्रमुख हैं, किन्हीं दृष्टियों से वह अरस्तु की 'पॉलिटिक्स' से भी श्रेष्ठतर है। श्री डेविस के मतानुसार अरस्तू की 'पॉलिटिक्स' जहाँ कुछ दृष्टियों से अपूर्ण व पुनरावृत्तियों से भरपूर है, वहीं कौटिल्य का 'अर्थशास्त्र' इन दोषों से सर्वथा मुक्त है। श्री भास्कर आनंद ने भी 'अर्थशास्त्र' के विषय में प्रायः ऐसा ही मत व्यक्त किया है और कहा है कि 'रूपरेखा व गठन की दृष्टि से 'अर्थशास्त्र' के सभी अध्याय सुव्यवस्थित तथा क्रमबद्ध हैं। ग्रंथ का गठन इतना प्रभावी है कि उसमें सुधार की और कोई संभावना ही नहीं है।'

सन्दर्भ

1 "Arthashashtra of Kautilya ..... is one of the earliest systematized treatises on the art of government representing higher water makr of a materialistic counter-reaction to the spiritual propaganda of the preceedings age." - N.C. Bandhyopadhyaya, Development of Hindu Polity and Political Theories, (Calcutta Oriental Press, Calcutta). p. 54.

2 "The Indians belong to the category of peoples who have left their impress upon the pages of history as the founders of original system of political thought." - U.N. Ghoshal.

3 "It (economics) examines that part of individual and social action which is most clesely connctede with the attainment and with the use of the material requisites of well being." - Marsall : Principles of Economics, p. 1.

4 वाचस्पति गैरोला : हिन्दी व्याख्यासहित कौटिलीय अर्थशास्त्रम्, पृ. 60

5 Evolution of Indian Polity.

6 Hindu Polity.